

निर्णयसार

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन
बम्बई

श्रीः

निर्णयसार



वेदके तत्त्वमसि और बीजकका सार सिद्धांत,

बीजककी टीका प्रकाशक महात्मापूरणसाहेबकृत.

जिसको

एककबीरपंथी साधु काशीदासजीद्वाराशुद्ध प्रति

प्राप्तकर.

सर्व कबीरपंथी जिज्ञासुजनोंके

अपूर्व लाभार्थ—

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास™,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई – ४०० ००४.

संस्करण : जुलाई २०१८, संवत् २०७५

मूल्य : ३० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop. Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

भूमिका



आजकल जगत्में अनेक प्रकारके बोध, अनेक उपासना, नाना मतादि अनेक ग्रंथ ज्ञान प्राप्तिके लिये प्रगट भये हैं। परंतु सबमें वेद शास्त्रोंका सिद्धांत तत्त्वमसि महावाक्य का निर्णय है। उसीमें जीव ही ब्रह्म अद्वैतरूप,सर्वत्र व्यापक, जड चैतन्य मिश्रित एक परमात्मा मुक्तपद सब महात्माओंने स्थापन किया है। अज्ञानी प्रपंची लोग देहमें पंचतत्त्वोंके पंचविषयोंमें धुंध गाफिल परे हैं। और ज्ञानी महात्मा लोग सब पच तत्त्वरूप ब्रह्माडको ही परमात्मा का स्वरूप सिद्ध करते हैं। तुलसीदासजी का प्रमाण–

चौपाई–,, सिया राम मय सब जग जानी ।। करौं प्रणाम जोरि युग पानी ।।" याते पंच विषयरूप ही परमात्मा सिद्ध हुआ है। जड चैतन्य की ग्रंथी सूक्ष्म ब्रह्मांड बीज रहनेसे छूटी नहीं। इसी कारण बुरहारपुर नागझरी स्थानपर बीजक की टीका प्रकट किये हुये महात्मा पूरणसाहेब कबीर साहेबके अवतार समान ७० वर्षके पीछे हो गये हैं। उन्हींसे ही रचित ये छोटेसे निर्णयसार ग्रंथमें गुरु शिष्य सम्वादरूपसे वही तत्त्वमसि महावाक्यका सिद्धांत सरल कविताई में विधि संयुक्त निर्णय किये हैं। अंतमें जड चैतन्य मिश्रित परमात्मा व्यापक होनेसे उसीमें पूर्ण कसर दर्शाई है और चैतन्य जीवको पारख दृष्टि देके देहबंधनसे मुक्त होने का साधन कहे हैं सोई कबीर साहेबका सत्य निर्णयरूप सिद्धांत है। यह ग्रंथ इलाहा-

बादमें पंचग्रंथी में छपा था परंतु 'अकेला न्यारा छापने से कीमत कमती होगी ' इसी सबबसे कबीर पंथी साधु काशीदासजीद्वारा शुद्ध करके मिल जानेसे छपाया है याते "अधिकारी जिज्ञासु जन अपना कार्य जलदी सुधार लेवें ।

सतगुरवे नमः

अथ निर्णयसार



दयागुरुकी

दोहा– वंदनिये गुरु परख को, बार बार कर जोर ।।
दयाकरण संशय हरण, संतरूप प्रभु तोर ।।१।।
बंदीछोर कृपालु प्रभु, विघ्न बिनाशक नाम ।।
अशरण शरण बन्दों चरण; सब विधि मंगल धाम ।।२।।

चौपाई–शरण शरण कबीर कृपाला ।। भक्त सहायक दीन दयाला ।। जीव उधारण नाम तुम्हारा ।। याहिते आप संत तन धारा ।। काल जालके फंदा भारी ।। मेटि कियेउ निज दास सुखारी ।। तुम सब लायक अंतरयामी ।। हम नालायक जीव बेकामी ।। बंदौं गुरुपद दोउकर जोरी ।। सब संशय मेटहु प्रभु मोरी ।। निर्णयसार ग्रंथको भाऊ[1] ।। कहहु यथा उपदेश प्रभाऊ ।।३।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–कौन जमा है जगत मँझारा ।। जापर होत सकल बैपारा ।। बिना जमा बैपार न होई ।। यह तो विदित जाने सब कोई ।। कोई ब्रह्मज्ञान बतलावे ।। कोई योग समाधि लगावे ।। कोई तीरथ बरत अचारा ।। कोई कालकर्म विस्तारा ।। कोई जप तप संयम[2] करई ।। कोई मूरति पूजा धरई ।। नाना पंथ नाना गुरु-वाई ।। कौन जमापर राह चलाई ।।४।।

---

१ भावार्थ । २ इद्रियनका रोकना ।

दोहा– काल कर्म औ करता, कौन जमापर ठहार ।।
योग सांख्य वेदांत मत, कहहु सकल निरुवार ।।५।।

गुरुउत्तर

चौपाई–कहहिं कबीर सुनशिष्य सयाना ।। यह सब भरमजाल बिधिनाना ।। जीव जमा एक सांच है भाई ।। औरों सबै खर्च ठहराई ।। जीवहि ब्रह्म आतमा होई ।। जीवहि योग करे सब कोई ।। जीवहि कर्ता कर्म बनावे ।। जीवहि काल समय ठहरावे ।। चारि वेद औ नाना बानी ।। कल्पि कल्पि सब जीव उत्पानी ।। भये सिद्धांत जेते जग सोई ।। सो सब भास जीवको होई ।। जीव जमा नहि होइरे भाई ।। सब सिद्धांत कौन ठहराई ।।६।।

दोहा– कहहि कबीर बिचारिके, ये निर्णय परमान ।।
जीव जमा जाने बिना, सबै खर्चमें जान ।।७।।

सत्त शब्द टकसार

साखी–जो जानहु जग जीवना । जो जानहु सो जीव ।।
पानी पचावहु आपना । तो पानी माँगि न पीव ।।८।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–जीव जमा जो कहेउ गोसाँई ।। यह निश्चय हमरे चित आई ।। जो तुम कहेउ सोई है साँची ।। जीव जमा चाहौं प्रभु जाँची ।। हम अजान है शिष्य तुम्हारा ।। कहि समुझावो सकल निरुवारा ।। जीव जमा काहे सो कहिये ।। याकी समझ कौन बिधि लहिये ।। पांच तत्त्व गुण तीन शरीरा।।यामें जीव कौन गुण धीरा[1] ।। कोई वार्य जीव ठहराये ।। कोइ रक्त कोइ तेज बतावे ।। कोइ श्वासा कोइ शून्यहि कहई ।। नाना बानी जगमें बहई ।।९।।

दोहा– यह तो जानि परे नहीं, जीव काहा धौं आय ।।
यह संशय प्रभु मेटिके, सतगुरु होहु सहाय ।।१०।।

गुरुउत्तर

चौपाई–यह सब नाशमान है भाई ।। जीव जमा ये कैसे

---

१ अचल ।

कहाई ।। जो नाश सो जीवन होई ।। जीव सदा अविनाशी सोई ।। चिरंजीव[1] जीव कहि दीन्हा ।। यह सब नाशमान तुम चीन्हा।। पांच तत्त्वका जाननहारा । तीनों गुणका करत विचारा ।। वीर्य रक्त तेज तम श्वासा ।। सबको जानि करत विश्वासा ।। शून्यहि जाने शून्य न होई ।। जाननहार जीव है सोई ।। जानहि आप जीव कहेलाई ।। सबको जाने सब नहीं होई ।। जो पांचों तत्त्व जाने भाई ।। सो का आपु तत्त्व हो जाई ।। तत्त्वहि होके तत्त्व समावत ।। तो पुनि तत्त्वहि कौन बतावत ।। जानहि मात्र जीव हैं सोई ।। जानते अधिक और नहिं कोई ।।११।।

दोहा– पांच तत्त्व यह जगत सब । जाने सो जीव जान ।।
कल्पे सोई कल्पना । माने सो अनुमान ।।१२।।

सत्त शब्द टकसार

साखी–जागृत[2]रूपी जीव है, शब्द सोहागा सेत ।।
जर्द बुन्द जल कुकु[3]ही, कहहि कबीर कोई देख ।।१३।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–हे प्रभु जान सबन पर होई ।। जानते अधिक और नहिं कोई ।। सो कैसे बंधन तर आवा ।। ठौर ठौर कस आपु बँधावा।। यह तो धर्म जान के नाहीं ।। बगरे पकरि बँधावत बांहीं ।। जान जीव अविनाशी होई ।। तेहि जड बंधन कैसे समोई ।।१४।।

दोहा– काहुका किया जीव है, कि है आपुहि आप ।।
कैसे बंधन में परो, याहि कौन मा बाप ।।१५।।

गुरुउत्तर

चौपाई–याको माय न याको बापा ।। यह तो स्वतः आपुही आपा ।। याको नहीं कोई करतारा।। यह तो सबका सिरजनहारा।। माया[4] पुरुष[5] याहि निरमाया ।। भरम भूलि निज तन बिसराया ।। मानि मानि बंधनमें आवा ।। निज करतबमें आपु बँधावा ।।१६।।

---

१ अमर। २ जाननहार। ३ सेवारअथवा बुलबुला। ४ इच्छारूप । ५ ईश्वर।

दोहा– जस सुवना ललनी फँदो, कीट कुसारी मांझ ।।
ऐसो गतिया जीवकी, भई दिवसते सांझ ।।१७।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–माय बाप याके कोइ नाहीं ।। स्वतः आप कस बंधन माहीं ।। कैसे निज तन आपु बिसारा ।। भरम भूलका कौन इसारा ।। कौन मानंदी इन प्रभु कीन्हा ।। भिन्न भिन्न बतलावहु चीन्हा ।। प्रथमें कौन देह हंसाकी ।। जाहि देहते झांई[1] झाँकी ।।१८।।

दोहा– कौन देह प्रथमैं हती, का मानंदी कीन ।।
कसे भ्रमवश जीव परो, भये सकल मति छीन ।।१९।।

गुरु उत्तर

चौपाई–हे शिष्य तुम पूछेउ भल बाता ।। तुमसें कहो सकल विख्याता ।। पक्की देह प्रथम हंसाकी ।। बीजक टीका में सब भाखी।।
वह जो यहां अब कहों बुझाई ।। तो यह ग्रंथ बहुत बढिजाई ।। दया क्षमा सत्त धीर विचारा ।। पांच तत्त्व हंसा के सारा ।। याहि देह हंसाकी भाई ।। याहीको ब्रह्मांड रहाई ।। याहि देह हंसाने देखी।। उपजो हर्ष निज प्रेम् विशेषी ।। प्रेम आनंद उठा घहराई ।। ता आनँद में हंस समाई ।। गयो समाय भयो आनंदा ।। बिसरीइ देह पडे भ्रम फन्दा ।। पक्कीते कच्ची भइ भाई ।। भई स्फूर्ति हंसा सुधि आई ।। इन जाना मैं भरम भुलाना ।। पक्की ते हंसा बिलगाना ।। पिंड ब्रह्मांड सबै भौ कच्चा ।। तामें आपु रहा जिव सच्चा ।। कच्चीके प्रताप ते भाई ।। दूसर इच्छा उठी बनाई ।।ताते नारि रूप निरमावा ।। सब कछु कीन्हा जो मन आवा ।। तेहि नारी के सुत भए भयेऊ ।। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर कहऊ ।। तबहिं कल्पि बहु बानि उपाई ।। कर्त्ता कारण इच्छा आई ।। पुनि सो रूप छूटिके गयऊ ।। एक अनंत आपही भयऊ ।। यह प्रकार जग भया तमासा ।। एक अनेक बँधो सोई आसा ।। सोई जीव रूप यह भाई ।। आपन बंधन आप बनाई ।।२०।।

---

१ परवा, गाफिली । २ प्रगट, खुलासा ।

सत्त शब्द टकसार

साखी–जहिया जन्म मुक्ता हता । तहिया हता न कोय ।।
छठी तुम्हारी हौं[1] जगा । तू कहां चला बिगोय ।।२१।।
चौपाई–मानंदी है तीन प्रकारा ।। है तत्त्वमसि वेद पद सारा।।
यदि तिहुँ पदके माने भाई ।। आवागवनमें जीव रहाई ।।२२।।
दोहा– तत्त्वमसी पद तीन जो, आवागवनको मूल ।।
सो भासो पद जीवको, सहे घनेरी शूल ।।२३।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–हो प्रभु जीवनके सुख दाता ।। मेटेउ मोर भरम सब ताता ।। हम जाना कर्ता कोइ दूजा ।। ताते भरम बढो बहु पूंजा[2] ।। कर्ता कारण जग बेहाला ।। अव मोंहि जानि परों सब जाला ।। तत्त्वमसी पद तीन कहाई ।। केहि विधि सो मोंहिं देहु लखाई ।।२४।।

दोहा– तत्त्वमसी पद तीनसो, केंहि बिधि जानी जाय ।।
हौं अजान जानों नहीं, सतगुरु देहु लखाय ।।२५।।

गुरु उत्तर

चौपाई–हे शिष्य तुम बड भागी होई ।। कहों विचार सकल बिधि सोई । मोंहि बोलनकी सरधा नाई । ।तोर प्रेम वश बालों भाई ।। कविता होउं न भांड कहाऊं ।। बकवादीके निकट न जाऊं ।। गुरुवाई औ मान बड़ाई ।। ऋद्धि सिद्धि सब जात नशाई ।। इनमें सकल जगत अरुझाना ।। काल कलाको मर्म न जाना ।। मोको नहिं इन सबते काजा ।। तुम्हरि भक्ति वश कहों उपराञ्जा ।। तत्पद सो ईश्वर कहलाई ।। त्वंपद नाम जगत जिवि पाई ।। असिपद नाम ब्रह्म अविनाशी ।। आतम अचल सहज सुखराशी ।।२६।।

दोहा– तत्पद सोई ज्ञान है, त्वंपद है अज्ञान ।।
असिपद एकता ब्रह्मा है, जासे कहत विज्ञान ।।२७।।

---

१ सुखका अहंकार । २ बहुत । ३ शिष्य

शिष्य प्रश्न

चौपाई–हे गुरु तुम हो दीन दयाला ।। मेटेउ सकल मोर उर साला ।। इनके नाम रूप दिखलावो ।। ठौर ठिकाना मोहि बतावो ।। कौन ठाम ईश्वरको कहिये ।। कौन ठाम जगत जिवि लहिये ।। कौन ठाम आतम कहलाई ।। सकल भेद मोहिं देहु बताई ।।२८।।

दोहा– तुम सब लायक परम गुरु, मैं अजान मतिहीन ।।
शरण आये के लाज है, सकल बतावहु चीन्ह ।।२९।।

गुरु उत्तर

चौपाई–सुनहु बाल तुम सकलविचारा ।। एक एक सब कहुँ निरुवारा ।। ब्रह्मांड बास ब्रह्मांड अभिमानी ।। सो चैतन्य ईशकर जानी ।। पिंडवास देह अभिमानी ।। ताकी जीव सब कहत बखानी।। दोऊका वाचांश[1] मिटावै ।। गहि लक्षांश[2] एकता पावै ।। सोई असि-पद ब्रह्मानंदा । जहँनहिं द्वैत अद्वैत को फंदा । ब्रह्मांड ठौर ईश्वरको कहिये । पिंड ठौर जीवको लहिये ।। असिपद ठौर आनंद बखानी ।। जहँ कछु कहत बने नहि बानी ।। अब इनके तोहि रूप बताऊं ।। व्यष्टि[3] समष्टि[4] सकलों समुझाऊं ।। ज्ञानी सो तत्पद कहलावे ।। अज्ञानी त्वंपद मन भावे ।। विज्ञानी को असिपद कहिये ।। परमहंस ऊंचा पद लहिये ।। तत्पद जैसा सिंधु बखाना ।। त्वंपद कूप तडाग विधि नाना ।। असिपद जैसा दुनहुँमें पानी ।। यह सिद्धांत करत बिज्ञानी ।। नामरूप मिथ्या कर जानी ।। आतम एक निश्चय जस पानी ।। यामें दोई विधि परमाना ।। एक परोक्ष विशेषहिं ज्ञाना ।। दूजा सो अपरोक्ष कहाई ।। सो समान ज्ञान है भाई ।। द्वै विधि ज्ञान द्वै विधि अज्ञाना । द्वै विधिको विज्ञान बखाना ।। निरउपाधि अपरो-क्षहि ज्ञाना । सहउपाधि सो परोक्ष बखाना ।।३०।।

दोहा– वेद प्रमाण मह वाक्यको, कहेउं सकल परमान ।।
अब जो शंका करो शिष्य, सो सब करों बखान ।।३१।।

---

१ बानी । २ अनुभव । ३ जगत् । ४ ब्रह्म । ५ तालाब ।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–द्वै प्रकार कैसो अज्ञाना ।। कौन प्रकार द्वै विधि है ज्ञाना ।। द्वै प्रकार विज्ञान बताई ।। सो कैसे गुरु मोहि लखाई ।। प्रथम बतावहु द्वै अज्ञाना ।। पाछे पूछब ज्ञान निधाना ।। कौन अज्ञान अपरोक्ष कहाई ।। सो मोहि सकल कहो गुरुराई ।।३२।।

दोहा– तुम निज सतगुरु सत्यहो, अब हम चीन्हा तोहि ।।
सकलों भेद बतावहु, संशय रहे न मोहिं ।।३३।।

गुरु उत्तर

चौपाई–जो विशेष अज्ञान कहाई । सो अपरोक्ष कहावत भाई ।। ताको विधिवत करों बखाना ।। सुनु शिष्य जो अपरोक्ष अज्ञाना ।। विषयनमें आसक्त रहाई ।। जाति पाँति कछु समझत नाहीं ।। वेद मर्यादा कबहुँ न जाने ।। पंडितजनकी आन न माने ।। कौनको कुल कौन की जाती ।। अस कहि विषयारस उतपाती ।। खाय कबाब[1] शराब सो रोजा ।। निशिदिन पर नारिन को खोजा ।। गावे रस शृंगार बनाई।।वेश्यनके घर निशिदिन जाई।। पर नारिनपर तन मन वारे ।। द्रव्य होय सो सबै बिगारे ।। विषयिनका सँग निशिदिन करई ।। बामहिमत इष्ट आचरई ।। कोइ ज्ञानी तेहि ज्ञान सुनावे ।। ताहि उलटके झगरन धावे ।। बाद अन्यथा निशिदिन करई ।। सांचहि झूठ झूठ निज धरई ।। कहे सब ज्ञानी भरम भुलाना।। विषय स्वाद कोई नहिं जाना ।। जगमें नारी संपति भोगा ।। इनसम और नहीं कछु योगा ।। मृगनयनी सब सुखकी खानी ।। ताहि त्यागि भये ब्रह्मज्ञानी ।। इनकी मति बुधि सबै हेराई ।। साधुनके सँग गए बौराई ।। बहुविधि रँग नाना विधि रागा ।। इनको त्यागि करत बैरागा ।। कर्महीन दारिद्री आहीं ।। घर घर भीख सो मांगत जाहीं ।। इनको कहिये परम अभागी ।। हमहिं जगतमें हैं भड भागी।। हम ज्ञानी ये सब अज्ञाना ।। बहुमत योग ज्ञान जिन ठाना ।। मूये पर सब मुक्तहि होई ।। नाहक पचि पचि मरे सब कोई ।। जो कछु

---

१ मांसके पदार्थ ।

है सो देहरे भाई ।। ताका सेवन करो बनाई ।। इंद्रिन भोग भली विधि दीजे ।। बहुत विचार काहेको कीजै ।। मरे फेरको जन्मे आई ।। जन्मे को कोइ देखा भाई ।। बहुरि जन्म ना मिथ्या जानो ।। जीव ब्रह्म सब मिथ्या मानो ।। पांच तत्त्वकी देह बनाई ।। अंत पांचमें पांच समाई ।। जैसे वृक्षसे पत्र झराई ।। बहुरि वृक्षसे लगिन-हिंजाई ।। और पत्र वृक्षासे उपजे ।। ऐसहि जगत योनि बहु निपजे ।। पांच तत्त्वको वृक्ष अनादी ।। तामें उपजत बिन सत सादी ।। ताते कहा हमारा मानो ।। बोध विचार संशय करि जानो ।। ताते जौलों देह है भाई ।। विषय भोग सब करो बनाई ।। इनका कहा कोई मति मानो ।। वृद्ध[1] बूढ़ भरमिक करि जानो ।।३४।।३५।।

दोहा– यह अपरोक्ष अज्ञान गति, तेंहि कहेऊं समुझाय ।।
बहिके विषयी बावरे । अंत महादुख पाय ।।३६।।

चौपाई–अब अज्ञान परोक्ष बताऊं ।। ताकी रीति सबै समुझाऊं ।। पहिले अपरोक्ष अज्ञान बताई ।। तामें दो प्रकार है भाई ।। पर इच्छाते होय अज्ञाना ।। समानाधिकरण[2] सो जाना ।। स्वइच्छा अज्ञान जो होई ।। विशेषाधिकरण कहावे सोई ।। विशेषा-धिकरण अज्ञाना ।। गीतामें भाख्यो भगवाना ।।३७।।

(अध्याय १४ श्लोक ८)

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्व देहिनाम् ।।
प्रमादालस्य निद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ।।

टीका।। दोहा–हो तमोयुत अज्ञानते, मो हित सबको हीय।।
आलस निद्रा बिकलता । इनसों बाँधत जीय ।।३८।।

चौपाई–अब परोक्ष अज्ञान बताऊं ।। सामानाधिकरण तेहि नाँऊ ।। कर्ता कोइ दूजा अनुमाना ।। तेहिते कर्म करहिं विधिनाना।। मंत्र तंत्र औ देवी देवा ।। बहुत प्रकार करहिं सो सेवा ।। तीरथ व्रत और मूर्ति अचारा । उपासना कांडको बहुबिस्तारा ।। छैशा-

---

१ अनुभवी, ज्ञाता । २ समान और अधिकरण मिलके समानाधिकरण । अधिकरण कहिये स्थान ।

स्त्रन विधि बहु विधि जाने ।। वेद प्रमाण कम मन माने ।। जाति पांतिको जो व्यवहारा ।। करहिं भली विधि वृद्धअचारा ।। कुलाचारमें निपुण गोसांई ।। मानहिं आपन मान बडाई ।। वेद पुराण कहानी सुनहीं ।। सो सब मनमें बहुविधि गुनहीं ।। बर्ण आश्रमके कर्म अपारा ।। सो सब जानि करे निरधारा ।। विधि निषेधमा बहु विधि राचे ।। क्रिया कर्म सब मानत साँचे ।। गउ ब्राह्मणका पूजन-करहीं ।। नीति जानि जगकी आचरहीं ।। यह अज्ञान परोक्ष बखाना।। औरो कर्म करत बिधि नाना ।। कर्महुमें हैं दुइ परकारा ।। समान विशेष कहत निरधारा ।। योग ध्यान समाधिलगाई ।। ऋद्धि सिद्धि करामाति मनाई ।। धन अरु धान्य लक्ष्मीके काजा ।। मंत्र तंत्र साधत महराजा ।। यंत्र लिखे औ पूजा करहीं ।। स्त्री पुत्रादि वासना धरहीं ।। देवी देवताको आराधे ।। शाप अनुग्रह बाचा साधे ।। काया कल्प करे मनलाई ।। जगमें चाहत बहुत बड़ाई ।। स्वर्गादिककी इच्छा माने ।। करहिं तपस्या औ अस्नाने ।। यह प्रकार कर्म विधि नाना ।। विशेषादि कर्म सो जाना ।। अब समान कर्म बतलाऊ ।। एक एक सबकहि समुझाऊं ।। कर्ता निमित्त कर्म जो करहीं ।। मुक्ति बासना मनमें धरहीं ।। मुक्ति हेतु बडे अनुरागी ।। कर्म सुकर्म करे कोइ भागी ।।

इह[1] अमुत्र[2] फल भोग विरागा।।शम[3]दमादि[4] साधन में जागा।। यही कर्म समान कहावे ।। मुक्ति वासना मनमें आवे ।। परोक्ष कर्म जो कहा विचारा ।। याहि मता भक्तन मन धारा ।। अपरोक्ष कर्म प्रथम जो कहेऊं ।। सो सब मत कर्मिष्ठिन[5] गहेऊं ।। कर्मरूप कर्मिष्ठिहि जानो ।। अकर्मरूप अकर्मी मानो ।। परइच्छा कर्म अकर्म जो होई ।। समानाधिकरण कहावे सोई ।। स्वइच्छा जो कर्म अकर्मा ।। विशेषाधिकरण को धर्मा ।। याकी साख गीतामें भाई ।। पारथसे भाषी यदुराई ।।३९।।

---

१ ये लोक। २ स्वर्गलोक। ३ मनजीतना। ४ इंद्रियेंजीतना। ५ कर्मीलोगोंने।

(अध्याय १४ श्लोक ७)

रजोरागात्मकं विद्धि तृष्णासंगसमुद्भवम् ।।
तन्निबध्नाति कौंतेय कर्म संगेन देहिनम् ।।

दोहा- रजगुण राजस रूप है, तृष्णा संगके हेत ।।
कर्म संगकरि जीवको, ऐसे बंधन देत ।।४०।।

चौपाई–यह विशेषादि कर्म परोक्षा ।। साख सुनाई तोहि सबलक्षा ।। अब सुनु साख परोक्ष समाना ।। समानाधिकरण जेहि माना ।।४१।।

(अध्याय १४ श्लोक ६)

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात् प्रकाशक मनामयम् ।।
सुख संगेन बध्नाति ज्ञान संगेन चानघ ।।

दोहा- निर्मल अरु प्रकाशकरी, सतगुण शांत सुभाय ।।
ज्ञान संग सुख संगसे, बांधत जीवहि जाय ।।४२।।

चौपाई–यहि विधि द्वै प्रकार अज्ञाना ।। परोक्ष औ अपरोक्ष बखाना ।। याहीको त्वंपद है नाऊं ।। वेद प्रमाण सकल समुझाऊं ।। द्वै प्रकार अज्ञान कहावा ।। तामें विशेष कला दुइ पावा ।। औ पुनि द्वै समान बखाना ।। यामें बँधे जीव विधिनाना ।। सोई जीव अज्ञानी होई ।। द्वै विधि जेहि अज्ञान समोई ।।४३।।

दोहा- अज्ञानी जिव याहिते, नाम परो है जान ।।
दुइ प्रकार अज्ञान को, दृढकै लीन्हों मान ।।४४।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–हे प्रभु अहु जीवन सुखदाता ।। मेटेउ सब संशय भ्रम घाता ।। तुम समान को आहि दयाला ।। हतेउ भरम वशि कियेउ निहाला ।। दोयप्रकार अज्ञान बतावा ।। तामें चारि कला समुझावा ।। यामें बँधे जीव अज्ञानी ।।-यह विचार हमरे मन मानी ।। अब जो विनय करों प्रभुराई ।। तौन भेद गुरु देहु बताई ।। जीव अज्ञान एकही कहिये ।। की कछु भिन्न भाव करि लहिये ।।४५।।

दोहा– जीव अज्ञानसों भिन्न है, की धौं एकै होय ।।
यह शंका प्रभु मेटिके, देहु सकल भ्रम खोय ।।४६।।

गुरु उत्तर

चौपाई–हे शिष्य सुनहु कहों विधि सोई ।। जीव अज्ञान एक नहिं होई ।। रोगी रोग एक नहिं भाई ।। यह तो विदित सब जगत जनाई ।। रोगी रोग एक जो होता ।। विकल रोग बश काहेक रोता।। रोगी भिन्न रोग है भिन्ना ।। तैसे जीव अज्ञानहि चीन्हा ।। जीव चैतन्य सदा अविनाशी ।। जड आसक्त अज्ञान सो नाशी ।। नास्ति अज्ञान सम्बंधी भयेऊ ।। ताते नाम अज्ञानी कहेऊ ।। अज्ञानके सम्बंध ते भाई ।। अज्ञानी नाम जीव कहाई ।। अज्ञान भिन्न अज्ञानी भिन्ना ।। इमि जाने सो ज्ञान को चीन्हा[1] ।।४७।।

दोहा– जीव और अज्ञानसो, कभी सम्बंध ना होय ।।
वह आसक्त जड नास्ति है, यह अविनाशी सोय ।।४८।।

शिष्य प्रश्न

सोरठ–हे गुरु दीन दयाल, जीव रहत अज्ञान वश ।।
ताते सदा बेहाल, बहुरि बहुरि जग तन धरे ।।४९।।
किमि अज्ञान ह्वै नाश, कैसे ज्ञान प्रकाश होय ।।
जीव पाव सुख बास, सोई युक्ति बताइये ।।५०।।
कै प्रकार है ज्ञान, सोई बिधि समुझाइये ।।
एक कि द्वै परमाण, निर्णय सत्य लखाइये ।।५१।।

गुरु उत्तर

चौपाई–हे शिष्य तोंहि त्वंपद समुझावा ।।
द्वैप्रकार अज्ञान बतावा ।। कर्म उपासना और उपाधी ।।
त्वंपद भयेउ बेदकी आदी ।। अब तत्पदको भेद बताऊं ।।
द्वै प्रकार ज्ञान को भाऊं ।। एक समान ज्ञान है भाई ।।
एक विशेष ज्ञान कहलाई ।। विशेषाधिकरण न्यायजेहि गावै ।।
सोई ज्ञान परोक्ष कहावै ।। समानाधिकरण है ज्ञाना ।। सो अपरोक्ष

---

१ निसानी ।

वेद मत जाना ।। विशेष ज्ञान उपाधी युक्ता ।। निरूपाधि समान सो मुक्ता ।। विशेष ज्ञान युत जो जिव होई ।। वेद ईश कहि गावत सोई ।। समान ज्ञान रत सोई ज्ञानी ।। यह निश्चय वेदांत बखानी ।।५२।।

शिष्य प्रश्न

दोहा– विशेषाधिकरण है, ज्ञान परोक्ष प्रधान ।।
सोई प्रथम समुझाइये, ईश लक्ष सहि दान ।।५३।।

गुरु उत्तर

चौपाई–हे शिष्य तोहिं कहों समुझाई ।। जाते संशय सकल नसाई ।। निज तनकेर उपाधी जाने ।। पर उपाधि सकलो पहिचाने ।। दुखसुख सहित अवस्था तीनी ।। सब ब्यौहार जाने परबीनी ।। तन इंद्री इंद्रिन व्यवहारा ।। खानी बानि सकलो निरुवारा।। ये सब मिथ्या जाने रे भाई ।। इंद्रजालवत देत लखाई ।। सर्व साक्षि मैं आदि स्वरूपा ।।

ये सब मृगजलवत भ्रम कूपा ।। ये सब नाशमान अनित्या ।। मैं अविनाशी चेतन नित्या ।। सब असत्य मैं सत्य त्रिकाला ।। तीन दह मायाको जाला ।। बारम्बार स्फुरण अस होई ।। ज्ञानपरोक्ष कहावत सोई ।। ज्ञान परोक्ष दोय परकारा ।। ताको सकल करों निरुवारा ।। सब सत्ता और सब सामर्थी ।। ऋद्धि सिद्धि सहित जो बरती ।। होनी अनहोनी सब करही।। षट[1] गुण ऐश्वर्य चित धरही।। सोई जीव सिद्धि रे भाई ।। सोई जगतमें ईश कहाई ।। दूजे निरुपाधिक है भाई । ऋद्धि सिद्धि कछु मानत नाहीं ।। ऋद्धि सिद्धि ऐश्वर्य औ देवा ।। ईश्वर माया नास्ति है भेवा ।। जगत जाल मृगजल सम आहीं ।। करन करावन नहिं मन माहीं ।। मन माया कृत नास्ति उपाधी । मैं आस्तिक सबहिनके आदी ।। त्रिगुण उपाधि नास्ति व्यवहारा ।। मैं साक्षी सब जानन हारा ।। मोको जानि सके

१ यश, लक्ष्मी, कीर्ति, शूरता, उदारता और दूसरेके मनको उलटावना ।

नहिं कोई ।। जोपै विधि हरि शंकर होई ।। त्रिगुणातीत सबनको द्रष्टा ।। अद्वय अखंड वेदको इष्टा ।। व्यष्टि समष्टिहैं मिथ्या भाई।। मैं चैतन्य शुद्ध अधिकाई ।। यहि विधि फुरे काल त्रय भाई ।। सकल अविद्या जात नशाई ।। यह प्रकार जाको होय ज्ञाना ।। सो ज्ञानी है ज्ञान निधाना ।। यह प्रकार दुइ ज्ञान परोक्षा ।। अब तोहि कहो ज्ञान अपरोक्षा ।। तीन काल भासे नहिं कोई ।। सदा एकरस आपै सोई ।। बिसरे सकल सुषुप्ति समाना ।। द्वैत स्फुरण त्रिकाल न जाना।। ज्ञाता ज्ञानज्ञे'य नहिं भाई।। ध्याता ध्यान न ताहि समाई ।। सकलो त्रिपुटी जात नसाई ।। अखंड एकरस वृत्ति रहाई ।। आप भाव काल त्रय माहीं ।। द्वैत उपाधि न ताहि समाही ।। चिन्मय[१] वृत्ति सदा आनंदा ।। पूरण ब्रह्म सच्चिदानंदा ।। यह विधि ज्ञान होइ जेहि ज्ञानी ।। सो अपरोक्षहि ज्ञान बखानी ।। याहू में है दोय प्रकारा ।। हे शिष्य तोहि कहों निरुवारा ।। योग धारणा करि मनमारे ।। अखंड वृत्ति एकरस धारे ।। ज्ञान सो मध्यम पक्ष कहाई ।। आगम निगम कहें गोहराई ।। श्रवण मनन निदिध्यास जो करई ।। साक्षात्कार वृत्ति निज धरई ।। ऐसे करत स्थिर ह्वै जाई ।। द्वैत भाव कबहीं नहिं आई ।। यह प्रकार जो कोइ रहि जावे ।। उत्तम पक्ष-वेद तेहि गावे ।। यहि विधि ज्ञानयुक्त जोजीवू ।। सो अविनाशी ज्ञानी शीवू ।।५४।।

शिष्य प्रश्न

दोहा– ज्ञानहि जानहि भेदकस, कहो गुरु दीनदयाल ।।
बारबार बंदन करूं, जीवनके रछपाल ।।५५।।

गुरु उत्तर

चौपाई–ज्ञान जान अन्तर कछु नाहीं ।। तदपि संत कछु भेद बताहीं ।। ज्ञान सबनमें बंध रहाई ।। ज्ञानके उदय मुक्तहोय जाई ।। जानबे माहीं होय विशेषा ।। जबहिं ज्ञान को पावे लेषा ।। जस मलीन दर्पण को भाऊ ।। ऐसो जीवको आहि स्वभाऊ ।। मैल

---

१ पदार्थ । १ प्रकाशरूप, समाधिरूप ।

निकरि दर्पणको जाई ।। तबहिं मुकुर¹ निजरूप देखाई ।। जैसे दीपक आहि उजियारा ।। ढांकन परे होत अँधियारा ।। यहि बिधि जानहि ढांकु अविद्या ।। सो नासत जब पाय सुविद्या ।। जैसे सूर्य मेघमें ढांका ।। पाय बयारी बादर फांका ।। स्वतः भानु प्रगटे उजियारा ।। यहि विधि जानहि ज्ञान विचारा ।। ज्ञान जान जो अंतर होई ।। हे शिष्य तोहि कहा अब सोई ।।५६।।

शिष्य प्रश्न

दोहा– ज्ञानहि जानहि भेद नहिं, एक जातिदोउ आहिं ।।
तुव प्रसादते जानेऊं, यहिमें संशय नाहिं ।।५७।।

गुरु उत्तर

सोरठा–ज्ञान सजाती होय, और अज्ञानबिजाति है ।।
कहेउँ सकल बिधि सोय, तुमहू जानेउ नीक बिधि ।।५८।।

शिष्य प्रश्न

सोरठा–हे गुरु दीन दयाल, ज्ञान भयो जब जीवको ।।
ताकि स्थिती विशाल, काह कसर तामें रही ।।५९।।

गुरु उत्तर

चौपाई–हे शिष्य सुनहु तासु निरुवारा ।। सब ज्ञानिन मिलि कीन्ह विचारा ।। तीनिदेह विस्मृति ह्वै जाई।। जानीब दशा शेष रहि जाई ।। तामें कसर बतावत वेदू ।। ताते ज्ञानी कीन्ह निषेदू ।। केहि बिधि कसर सुनो अब सोई ।। ए²कोहं जानीबमें होई ।। बहु³-स्याम ताते बिस्तारा ।। परो अविद्याको अँधियांरा ।। यही कसर जानीबमें होई ।। सब सिद्धांत कहत है सोई ।। सोई जानीब स्फूर्तिको नांऊ ।। सबलब्रह्म कोई बतलाऊ ।। कोइ मूलमाया तेहि कहई ।। सब माया जाहीते लहई ।। सकल करतूत जानीबके मांही ।। तातें जानीब कसर रहाही ।। जाति बिजाति स्व⁴गत नहिं भेदा ।। तीनों त्रिपुटी होय निखेदा ।। मैं अरु मोर भावना छूटे ।। जगत अविद्या चित्तसे टूटे ।। कहां आहि कहांधौं नाहीं ।। अस विज्ञान होय जेहि मांही ।। सोई जीवनमुक्त कहावे ।। वेद प्रमाण शास्त्र अस गावे।।६०।

१ आपना । २ फुरना, इच्छा । ३ जगत् । ४ मिलाप ।

शिष्य प्रश्न

दोहा- कृपा करो शिष्य जानिके, मैं सेवक मतिमंद ।।
निज विज्ञान बताइये, काटो भ्रमको फन्द ।।६१।।

गुरु उत्तर

चौपाई–जानि बूझि जडवत ह्वै जाई ।। जानीब[1] नेनीब[2] कछुन रहाई ।। जैसे उनमत अति मतवारा ।। नेकु न रहे शरीर सँभारा ।। यहि विधि सहज दशा ह्वै जाई ।। महदानंद मगनता पाई ।। भावातीत भाव पहिचाना ।। कलातीत बरते वर्तमाना ।। अवस्थातीत अवस्था रहई ।। दशातीत दशा निरबहई ।। आतम ज्योंका त्योंहि बिराजे ।। एक अनेक सबै भ्रम भाजे ।। स्वजाति विजाति स्वगत नहिं भेदा ।। इकतामें को करत निषेधा ।। याहूमें है दुइ परकारा ।। हे शिष्य तोहि कहों निरधारा ।। जहां विज्ञान दशा रहि आई ।। सो विज्ञानी हंस[3] कहाई ।। कहबेमात्र बानी को ज्ञाना ।। सो मिथ्या विज्ञान बखाना ।। द्वैत भाव कबहूं नहिं आई ।। एक भाव निशिदिन बरताई ।। हे शिष्य अचरज कहा न जाई ।। कारण कारज आपु रहाई ।। आपुहि बोलै आपु बोलावै ।। आपुहि खेले आपु खेलावै ।। करे करावे आपुहि आपा ।। द्वैत भाव मिथ्या संतापा ।। देखे दिखावे आतम आपू ।। विविधि भरम सकलो जग तापू ।।६२।।

दोहा- कछु दृष्टांत बताइये, आतमको समुझाय ।।
जाते मोहि निश्चय परे, मैं प्रभु लागत पाँय ।।६३।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–आतमसे कछु भिन्न जो होही ।। तो दृष्टांत कहौ मैं तोही ।। ये तो सब दृष्टांत अतीता ।। ना कछु नित्य न कछू अनीता।। द्रष्टा दृश्य दर्शन कछुनाहीं ।। सब कछु आतमरूप दिखाहीं ।। नाम रूप मिथ्या करि जानो ।। कहना सुनना मिथ्या मानो ।। जस सुवर्ण भूषण है एका ।। ऐसो जगत आतमा देखा ।। मृत[4] विकार सब मृतिका

---

१ ज्ञान । २ अज्ञान । ३ १ परमहंस । ४ १ मट्टी ।

जानो ।। जल विकार सब जल पहिचानो ।। तैसा जग है आतम विचारू ।। तो सब आतमा है निरधारू।। सबै ब्रह्म कछु न्यारा नाहीं ।। जो देखा सो ब्रह्म समाहीं ।। ब्रह्महि कहै और कहलावे ।। ब्रह्महि बोधे और बोधावे ।। इतनो कहत बने नहिं भाई ।। सो अनुभव विज्ञान कहाई ।। आतम एक अखंडहि होई ।। ऐसहि कहत बने नहिं कोई ।। एक कहों तो दूसर होई ।। कहनहार न्यारा नहिं कोई ।। सबै सम्भवे आतममाहीं ।। विधि निषेध[1] कारण कछु नाहीं ।। कहत सुनत कछु बने न भाई ।। जस गूँगा लीन्हों गुड खाई ।।६४।।

शिष्य प्रश्न

सोरठा–आतम होना काज, येता कहना चाहिये ।।
हो प्रभु तुम गुरुराज, भेद यथार्थ बताइये ।।६५।।
दोहा– आतम होना कहां है, सदा आतमा आहिं ।।
अखंड निरंतर एकरस, कहो शिष्य तुमकाहिं ।।६६।।

शिष्य प्रश्न

सोरठा–हे गुरु दीनदयाल, ज्ञान विज्ञान जब ना हतो ।।
तबहूं आत्म कृपाल, ज्ञान पाय अबहीं भयो ।।६७।।

गुरु उत्तर

चौपाई–अचरज बात पूछो शिष्य मोहीं ।। सब वृत्तांत सुनावों तोहीं ।। ज्ञान विज्ञान भयो जब नाहीं ।। तबहूं आतम स्वयं रहाहीं ।। ज्ञान विज्ञान भयो जब भारी ।। तबहूं आतम सकल बिहारी ।। ज्ञान विज्ञान होय औ जाई ।। अज्ञानहि बहु बार नसाई ।। आतम जैसा व्योम स्वरूपा ।। उपजे खपे न अस्थिर रूपा ।।६८।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–अहो गुरुजी कहो समुझाई ।। ज्ञान विज्ञान काहेको चाई ।। ज्ञान विज्ञानको कारण कौना ।। सदा आतमा है मन भौना ।।६९।।

---

१ त्याग । २ आकाश ।

गुरु उत्तर

दोहा– भ्रांति मिटनके कारणे, सुनु शिष्य तू चित्त देय ।।
ज्ञान विज्ञान प्रकाशिया, यांमें नहिं संदेह ।।७०।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–भ्रांति मिटी कि मिटी न जाही ।। तो यह आत्मा है की नाहीं ।। जो कहो भ्रांति मिटी नहिं जौलों ।। आत्मा यह कहलाय न तौलों ।। तो एकता दृष्टांत बताये ।। औ अखंड कहिके समुझाये ।। [1]अधिष्ठान [2]आतमा कहिया।।सो विचार प्रभु कहंरवाँ रहिया।।सब दृष्टांत दोषित ह्वै तबहीं ।। कछु सम विषम बतावो जबहीं ।।७१।।

गुरु उत्तर

दोहा– भ्रांति मिटी की ना मिटी, आतम मिटे न कोय ।।
आतम अखंड अनादि है, मानिलेहु शिष्य सोय ।।७२।।

शिष्य प्रश्न

दोहा– वेद वचन उपदेश अरु, मिथ्या सब गुरुवाइ ।।
आतम तो मैं एकरस, नीकी बात बताइ ।।७३।।

गुरु उत्तर

चौपाई–अरे बाल मैं तोहि बताई ।। मिथ्या सत्य कछू नहि भाई ।। जो कछु होय तो द्रष्टा कहिये ।। द्रष्टा दृश्य न एकौ लहिये ।। सब बिलास कर आतम भाई ।। आपुहि खेले आपु खेलाई ।। यामें घटे बढे कछु नाहीं ।। चूप चाप रहिये निज ठाहीं ।। सब बानीको ह्वै गयो अंता ।। आपुहि आपा आतम अनंता ।। ज्यों का त्योंही आतम ब्रिराजे ।। मुक्त बंध एकौ नहिं लाजे ।।७४।।

दोहा– बोलन तो कछुना रहो; दुगदुग रहि मनमाहिं ।।
मैं जैसा तैसा रहा, स्थिति प्राप्त कछु नाहिं ।।७५।।
कौन दुःख छूटा अबै, का उपाधि गइ मोर ।।
मैं जैसा तैसा रहा, का विशेषता तोर ।।७६।।
सकलो मोर बिलास भो; जो तुम्हार उपदेश ।।
आवागवन कैसे मिटे, कैसे छूटे क्लेश ।।७७।।

---

१ सबका आदिस्थान । २ पदार्थ ।

गुरु उत्तर

चौपाई–आवागवन दुइ बिना न होई ।। आतम एक सदा है सोई ।। आवागवन काहेको भाई ।। मिथ्या भ्रम सब देहु बहाई ।। आतम सदा एकरस जानो ।। दूजा धोखा कबहुं न मानो ।। भरम वारता सब परमाना ।। विधि निशेध एकौ नहिं जाना ।।७८।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–मैं तो केवल आतम एका ।। दूजा भरम कहां ते देखा ।। मैं तो अजर अखँड कहलाया ।। मिथ्या भरम कहांते आया।। जाके मारे मैं बेहाला ।। सर्व देशमें दुखकी ज्वाला ।।७९।।

गुरु उत्तर

चौपाई–भ्रम को और नहीं अधिष्ठाना ।। भ्रम तेरा तुझहीमें जाना ।। तेरा भ्रम तुझहीमें होई ।। रज्जू सर्प न्यायवत जोई ।। ज्ञान अज्ञान सबै तुझही में।।रूप शूक्तिवत[१] उपजे जनमे ।।८०।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–हे गुरु तुम मोहि नीकि सुनाई ।। जानेउं तुव प्रसाद मन लाई ।। सर्प भ्रांती को अधिष्ठाना ।। रसरी भई सकल विधि जाना ।। तैसेही आतम अधिष्ठाना ।। जगत आदि भ्रांती विधि नाना ।। सो भ्रांती किमि छूट गोसांई ।। बिना अधिष्ठान भ्रांति ना आई ।।८१।।

गुरु उत्तर

दोहा– तौलों भ्रांती रहत है, जौलों कहियत अज्ञ ।।
ज्ञान भयो भ्रांती मिटी, आतम अज्ञन तज्ञ ।।८२।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–सुनिये, गुरुराई सुखदाई ।। ज्ञान समाधि इकदेशी आई ।। औ सबदेशी भ्रांति निहारो।। सर्व[२]देशि आतमहु विचारो ।। एकदेशी है ज्ञान समाधी ।। सहसनमें कोई जिव साधी ।। भ्रांतीतो सबदेशि कहाई ।। सकल जीवको प्राप्त गोसाँई ।। अधिष्ठान बिन भ्रांति न होई ।। अधिष्ठान में रहत समोई ।।८३।।

---

१ सीप २ सबमें व्यापक ।

गुरु उत्तर

चौपाई–ज्ञान समाधि भ्रांति रे भाई ।। जगत ब्रह्म भ्रांति ठहराई ।। अध्यारोप[1] और अपवादा[2] ।। ईसब भ्रांतिकेर विशादा ।। कहना सुनना भ्रांतिहि जानो ।। पूछनहू भ्रांती अनुमानो ।। कल्प-विकल्प भ्रांति सब होई ।। आतम सदा एकरस सोई ।। ज्योंकात्यों तू ब्रह्म अनंदा ।। पूर्ण समुद्र आनँद को कंदा ।। कल्प विकल्प औ जगत तरंगा ।। मिथ्या उठत होत सब भंगा ।।८४।।

शिष्य प्रश्न

दोहा– प्रलय अंबुवत[3] मैं भया, बहु तरंग मोहिमाहिं ।।
मैंहु स्वभाविक रहत हौं, सो तरंग मोहि पाहिं ।।
मम तरंग जगरूप सब, केहि विधि होवे शांत ।।
तरंग शांत हुये बिना मोको कहां निरांत[4] ।।८५।।

गुरु उत्तर

चौपाई–चित वात शांत जब होई ।। सकल तरंग शांत ह्वै सोई ।। बिना पवन नहिं तरँग उठाहीं ।। यह तो विदित आहि जग माहीं ।।८६।।

शिष्य प्रश्न

दोहा– चित्त वात कहँते उठे, कौन स्थान यहि केर ।।
सद्‌गुरु मोहि बताइये, मिटे चित्तको फेर ।।८७।।

गुरु उत्तर

दोहा– सबका अधिष्ठान तू, तुझ बिन और न कोय ।।
तुझ बिन दूजा होय तो, शिष्य बताऊं तोय ।।८८।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–सबको अधिष्ठान मैं आपू ।। मोहिमें रोग सकल संतापू ।। सकल रोगकै हमही मूला ।। मम स्वभावते मोहि अनु-कूला ।। आतम जगत सनातन ऐसा ।। रोग स्वभाविक छूटे कैसा ।। छूटे बिना न होइ है काजा ।। रोग विवश व्याकुल महराजा ।।८९।।

---

१ लक्षमें नहीं आता ऐसा बोलना है । २ नाशवान पदार्थनको निजस्वरूप थापना ऐसा वाद ३ जलवत् । ४ स्थिरता ।

गुरु उत्तर

दोहा– रोग स्वभाविक[1] कौन विधि । छूटत है यह भाय ।।
ऐसा समुझ विचारिकै । चूप चाप रहि जाय ।।९०।।
रोग असाध्य[2] कहँ जाइ है । तुम बिन नाहीं ठांव ।।
तुम्हैं छाडि फिर रोग सब, कहाँ धरावत नांव ।।९१।।
ताते सब विधि तुमहि हो, और न कछू विचार ।।
वोलन चालन थकित भो, मन चक्कर दे डार ।।९२।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–हैं प्रभु मोपैं कहो न जाई ।। जानि परी नहिं कछु अधिकाई ।। प्रथम प्रश्न मैं कीन्ह गोसांई ।। आवागमन कस जानहि आई ।। केहि कारण यह ज्ञान प्रकासा ।। आवागवनमें कीन्ह निवासा।। तब तुम कहा सकल मानेते ।। तत्वमसि आदि बंधन जेते ।। तब मैं पूछा अहो गोसाँई ।। बन्धन सबै बतावहु सांई ।। तब तुम करत चले निरुवारा ।। तत्समसि आदि सकल विचारा ।। हम प्रभु श्रवण मनन सब कीन्हा ।। निजध्यास साक्षातहु चीन्हा ।। चीन्हत चीन्हत हो प्रभुराई ।। जानते अजान भयो मैं आई ।। कहत कहत तुमहूं गुरु-राई ।। गुरुते आतम आपु कहाई ।। तुमहूं आतम हमहूं आतम ।। यह जग सब आतमा सनातन ।। अब प्रभु कौन मुक्ति ठहराई ।। कौन दु:ख छूटा गुरुराई ।। यह तो अनादि सिद्धको रोगू ।। ज्यों का त्यों बना है भोगू ।। एक विशेषता यामें पाई ।। कहत कहत आपुहि थकिजाई ।। सुनत सुनत मैंहूं थकि गयऊं ।। अब गुरु चूप चाप ह्वै हऊं ।।९३।।

गुरु उत्तर

चौपाई–अब तुम जिन घबरावहु भाई ।। पुनि विचार तोहिं तोहि देहु बताई ।। जौन बात हम तुमसे कहिया ।। तौन बात हृदयें नहिं रहिया ।। सुनि निर्णय तुमहूं घबराया ।। अंतर गत कछु थितहुं न पाया ।। तुम जिन शंका मानहु भाई ।। पुनि अब तोहि कहों समुझाई ।। प्रथम शिष्य तुम पूछामोही ।। केहि प्रकार मानंदी होही ।। सो तुमको हम प्रथम सुनावा ।। तत्वमसीका भेद बतावा ।। द्वै प्रकार

---

१ इच्छा मायाकी उत्पत्ति । छूटनेको कठिन ।

त्वंपद बतलावा ।। कर्म उपासना अज्ञान सुनावा ।। सबमें द्वै द्वै भांति बताई ।। पुनि तत्पदकी बात जनाई ।। ईश्वर और ज्ञानीको लेखा ।। समान ज्ञान औ कह्यो विशेषा ।। तापीछे असिपद दरसावा ।। परमहंस मत सब समुझावा ।। परोक्ष औ अपरोक्ष विज्ञाना ।। ताके भेद सुनायेउं नाना ।। सुनत भेद तुम भूले भाई ।। आप अपनपौ गये हेराई ।। तीनिउँ पदका जानन हारा ।। तुही जान अब करु निरुवारा ।। तेरा भास तुझहीको खावे ।। तीनोंपद यह जीव भरमावे ।। आवागवनको कारण भाई ।। तत्वमसी पद तीनि बताई ।। तुम जिन इनको मानहु लेखा ।। तीनों त्याग के करो विवेका ।।९४।।

शिष्य प्रश्न

सोरठा—तुम गुरु दीन दयाल, मैं अजान जानो नहीं ।।
तीनों पदको टाल, चौथा पद मैं कौनहूं ।।९५।।

गुरु उत्तर

चौपाई—हे शिष्य तू तिहुं पदको भासिक ।। चौथा पद तू परख बिलासिक ।। तत्त्वमसी पद तेरो भासू ।। तू अविनाशी स्वतः प्रकाशू[1] ।। याको यह प्रमाण है भाई ।। बिन भासे कछु कहा न जाई ।। जो तीनों पद मैं बतलाई ।। सो तोहिं भास भयो की नाहीं ।।९६।।

शिष्य प्रश्न

दोहा— जेहि बिधि आप बतायेऊ । समुझेउं सब गुरुदेव ।।
तीनिऊँ पद मोहि भासिया । परोक्ष अपरोक्ष सो भेव ।।९७।।

गुरु उत्तर

चौपाई—अब तू परखि देखु रे भाई ।। तीनों पदसे न्यार रहाई ।। तीनों पद अनुभव जेहि भयेऊ ।। सो अनुभवसे न्यारा रहेऊ ।। तत्वमसीको अनुभव करता ।। तत्त्वमसी से न्यारा बरता ।। जो तुम्हरे अनुभवमें आतावा ।। सोई रूप अपन ठहरावा ।। तामें मगन भये तुम भाई ।। न्यारा मैं ये परखन आई ।। जो भासे सो मोर स्वरूपा ।। यह वंधन अँधियारोकूपा ।। भिन्न अक्षत[2] अरु जानत नाहीं ।। मानि मानि बंधनके माहीं ।। याते आवागवन रहाई ।। बहुप्रकार दुख भुगतहु भाई ।।९८।।

---

१ हंस भी पाठ है । २ अविनाशी ।

शिष्य प्रश्न

दोहा– बारबार बंदन करों, हो गुरुपरख प्रवीन ।।
मोहक भेद बताइये, संशय डारो बीन ।।९९।।

चौपाई–असिपदमाहिं काह मैं माना ।। वहां न मान न सम्भव जाना ।। एक दोय जहँ कछू न बानी ।। भेद अभेद न तहां बखानी ।। निगुर्ण सगुण नहीं बिचारा ।। नाहीं जहाँ अवस्था चारा।। तहँ मानंदी काह बतावा ।। जहां न मन बानीको भावा ।।१००।।

गुरु उत्तर

दोहा– हे शिष्य परखो नीकि विधि, मैं सब देहुँ बताय ।। असि-पदका निश्चयतोहीं, केहि विधि परिया आय ।।१०१।। मन बुधि बानी जहां नहीं, निर्गुण सगुणहि नाहिं ।। सो तुम कैसे जानिया, मोहि कहो समुझाइ ।।१०२।।

शिष्य प्रश्न

दोहा– जिमि गूंगा गुड खात है, स्वादन कहे बखान ।।
तेहि प्रकार मोको भया, आतम ।नश्चयमान ।।१०३।।

गुरु उत्तर

चौपाई–हे शिष्य तुम भल मोहि सुनाई ।। जेहि प्रकार तोहि भास्यो भाई ।। जिमि गूंगा गुड खाय अघाई ।। सकल स्वाद वह जाने भाई ।। पर कछु कहत बने नहिं बानी ।। तोकह स्वाद भयो वह जानी ।। स्वादी सदा स्वादसे न्यारा । अहो शिष्य तुम करो बिचारा ।। तेहि प्रकार असि अनुभव बारा ।। तू अनुभविता सदा निन्यारा ।। हे शिष्य परखि देखहु भाई ।। क्या गूंगा गुडहो जाई ।। तिमि अनुभविता सदा निन्यारा ।। मानि मानि लीन्हों शिर भारा ।। माने सो बंधन सब भाई ।। ताते जीव बहुत दुख पाई ।।१०४।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–काह सँयोग बियोग कहाई ।। न्यारा मिला कछू न गोसाँई ।। मैं आतमा जैसे का तैसा।। प्रलय अम्बुलघु दीर्घ न कैसा ।। एक दोय मोमें कछु नाहीं ।। व्यापक व्याप्य कहों अब काहीं ।। मैं चैतन्य सब देश उजारा ।। ऐसहु कहत बने नहिं सारा ।।१०५।।

गुरु उत्तर

चौपाई–ऐसो भास शिष्य तोहिं भयऊ ।। बिन भासे कस निश्चय ठयऊ।।तति सूक्षम दृष्टि करि देखो।।भास मेटि निज परख विशेषो।।ज्योंका त्यों परिपूरण जोई।।ऐसो भास कौनको होई।।१०६।।

शिष्य प्रश्न

दोहा– ज्योंका त्योंही आतमा, मोको भासतदेव ।।
मो बिनु भासक को अहै, कहो ताहिको भेव ।।१०७।।

गुरु उत्तर

सोरठ–हे शिष्य ! तू है कौन, भास काहेते परखहु ।।
कहो यथा विधि तौन, जाते आगे सूझि है ।।१०८।।

शिष्य प्रश्न

दोहा– जो मेरो अनुभव अहै, सोई मेरो रूप ।।
सोई मैं अरु जगत सब, और सबै अँध कूप ।।१०९।।

गुरु उत्तर

दोहा– सब अनुभव तेहि भासिया, तू तो रहा निन्यार ।।
सो अनुभव तू क्यों भया, हेशिष्य करहु विचार ।।११०।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–हे गुरु तुम हो दीन दयाला ।। हरहू सकल मोर उरशाला ।। मैं हौ कौन नाहिं मैं जानत ।। अनुभव भास सोई मैं मानत ।। तुम जो कहा अनुभवते न्यारा ।। सो मैं आपन कीन्ह विचारा ।। मैं अनुभविता न्यार गोसाँई ।। कौन आहु यह नाहिं लखाई ।। जौन द्रिसे सो दूसर होई ।। निज स्वरूप किमि जानों सोई ।। निज स्वरूप करि माने सो को ।। तब वह भास परत है मोको ।। काहेते भासे सो नहिं जानों ।। ताते अनुभव सतकरि मानों ।।१११।।

दोहा– तुम सब लायक परमगुरु, हम अजान शिष्य तोर ।।
काहेते भासे कौन मैं, सोहि बतावहु ठौर ।।११२।।

गुरु उत्तर

चौपाई–याको झांई जानहु भाई ।। जानि बूझहू अचेत रहाई ।। या झांईका परिया ओटा ।। ताते सत भासत सब खोटा ।। यामें सुर नर मुनि सब अरुझा ।। बिन पारख याते नहिं सरुझा ।।

यह सुपोखीज्ञान कहाई ।। जानिबूझि अजान रहाई ।। जाको सब विज्ञान बतावे ।। ज्ञान सुपुप्ती सोइ कहावे ।।११३।।

शिष्य प्रश्न

दोहा– मैं नहिं जानो भेद कछू, तुम दयालगुरु देव ।।
कै प्रकारकी सुषुप्ती, मोको कहिये भेव ।।११४।।

गुरु उत्तर

चौपाई–द्वै विधि आहि सुषुप्ति विचारा ।। सोइ शिष्य तुम करो निरुवारा ।। एक अज्ञान सुषुप्ति कहाई ।। दूसर ज्ञान सुषुप्ती भाई ।। मूढ़ गाढ़ जब निद्रा आवे ।। सो अज्ञान सुषुप्ति कहावे ।। तत्व प्रकृति बिलय हो जाई ।। सकलो इंद्रिय ठौर बिलाई ।। कछु ना खबर रहीं कहे ताता ।। सुखमें सोय गयो सब राता ।। यह अज्ञान सुषुप्ति बताई ।। अब सुन ज्ञान सुषुप्ती भाई ।। स्थूल सूक्ष्म कारण को जाने ।। तीन अवस्था तीन अभिमाने ।। सब को जानि बिसारे आपू ।। जागृति माहिं सुषुप्ती थापू ।। आपन आप भाव मिटि जाई ।। ज्ञान सुषुप्ती सोइ कहाई ।। जानि बूझि सबको बिसरावे ।। आपन भाव रहन नहिं पावे ।। निज सुख मांझ गये गफिलाई ।। सोई ज्ञान सुषुप्ति कहाई ।। अजानपना में जो गफिलाई ।। सोई अज्ञान सुषोप्ति कहाई।।जानि बूझिके जो गफिलावे।सोई ज्ञान सुषोप्ति कहावे ।।११४।।

शिष्य प्रश्न

दोहा– ज्ञान सुषुप्ती तुम कही, मैं समुझेउँ गुरुदेव ।।
काह विकार तामें रहा, मोहि बतावहु भेव ।।११५।।

गुरु उत्तर

चौपाई–हे शिष्य सुनहु यथार्थ प्रकारा ।। ज्ञान सुषोप्ति में सकल विकारा ।। जिमि अज्ञान सुषोप्तिमें ताता ।। कछु विकार नजर नहिं आता ।। पुनि जागृति स्वप्नादिक भाई ।। यह ब्यौहार कहांते आई ।। जो विकार वहां जडते खोता ।। जागृति स्वप्नादिक ना होता ।। तो तुम देखो सुषुप्ती माहीं ।। कछु विकार नाहीं दर-साहीं ।। बीजरूप ये सकल रहावे ।। शाखा पल्लव सबै नसावे ।। ताते फिर फिर उपजे भाई ।। फिर फिर जाय सुषुप्ती समाई ।। तोहि कारण तोहि नजर न आवे ।। ज्ञान सुषुप्ती ब्रह्म कहावे ।।

तामें कछु नहिं दिसे विकारा ।। फिर कहँते प्रगट भयो जग सारा ।। सकल विकार ब्रह्ममें होई ।। बीजरूप सो रहत समोई ।। ब्रह्ममें सबै विकार नसावत ।। तो यह जगत कहांते आवत ।। सब विकार का मूल जो भाई ।। आपहि आप सो ब्रह्म कहाई ।। जौन बीज जहवाँते होई ।। तौन वस्तु तहां जानहु सोई ।। बीज बिना नहिं वृक्ष रहाई ।। वृक्ष बिना बीज कहां पाई ।। तैसा जगमें ब्रह्म बिराजे ।। ब्रह्म बिना जगत कहाँ छाजे ।। बीज वृक्ष को जैसो लेखा ।। तैसा जग अरु ब्रह्म विवेका ।। बीज वृक्ष पृथ्वी में लहिये ।। ब्रह्म जगत आतममें कहिये ।। ताते मिथ्या है सब भासू ।। छाँडि देहु तुम परख प्रकासू ।। ज्ञान अज्ञानसुषोप्ति विचारा । तोर भास तू इनते न्यारा-। त्यागी देहु परखि सब भासा ।।हे शिष्य दुख[1] सुख[2] मिथ्या आसा।११६।

शिष्य प्रश्न

दोहा– ये सब छोडा परखिके, हेगुरु कृपानिधान ।।
मोर रूप फिर क्या रहा, सो भाखहु परमान ।।११७।।

गुरु उत्तर

दोहा– काहेते तुम छाँडेहू, काहेते धर लीन ।।
यह तो चीन्ह बतावहू, तुम शिष्य परख प्रबीन ।।११८।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–ना जाना तत्वमसि बंधन ।। ताते अरुझि रहेउं बहु फंदन ।। निज स्वभाव वश भूल गोसांई ।। ताते बंधन धरेउं बनाई ।। आप मिले गुरु दीन दयाला ।। तीनिउ पद परखाये उजाला ।। तीनिउ पदकी कसर विकारा ।। तुम्हारी कृपा भयो निरुवारा ।। अनजाने बंधन गहि लीन्हा ।। जानि बूझि त्यागन तब कीन्हा ।११९।

गुरु उत्तर

चौपाई–बंधन सकल त्याग भौ भाई ।। पाछे बाकी काह रहाई ।। सो बाकीका करो विचारा ।। पावो सार शब्द टकसारा ।।१२०।।

शिष्य प्रश्न

सोरठा–हे प्रभु दीन दयाल, बाकी तो मैं ही रहा ।। और

---

१ जगत् । २ ब्रह्म ।

सकल भ्रमजाल, जानि बूझि त्यागेउं सकल ।।१२१।।

गुरु उत्तर

दोहा– जाते तिहुं पद परखिया, परखहु सब संसार ।।
सो पारख ढिग है कि नहीं, मोप्रति कहो निरुवार ।।१२२।।

शिष्य प्रश्न

चौपाई–पारख मोमें रहि गुरुराई ।। मोते नहिं कछु भिन्न दिखाई ।। जो पारख मोमें नहिं होखा ।। तो केहि भाँति परखतेउं धोखा ।। मोमें पारख सदा रहाहीं ।। मैं हूँ रहेऊँ पारखके माहीं ।। काल[1] स[2]न्धिझा[3]ईका फेरा ।। परख प्रतापते सबै निबेरा ।। स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण ।। कैवल्यादिक कीन्ह निवारण ।। सो पारख कहुँ आवे न जाई ।। भिन्न नहीं केहि विधि बतलाई ।।१२३।।

दोहा– मैं पारखमें होय रहा, पारख मोरे माहिं ।।
भास अध्यास औ कल्पना, मोको पावत नाहिं ।।१२४।।

गुरु उत्तर

चौपाई–सो पारख तव रूप कहाई ।। जाते धोखा भरम नशाई ।। पारख भूमि अटल अविनासी ।। सबके परे भिन्न नहिं भासी ।। जो कछु भिन्न भास है भाई ।। सो विजाति नाश होय जाई ।। ब्रह्म जगत अरु तनकी आसा ।। सबको त्यागि हरखमें बासा ।। सबको परख परखावन सारा ।। पारखको को परखनहारा ।। परख विचार अतिशय है झीना ।। जो जाने सो परख प्रवीना ।। परख भूमिका सदा उजागर ।। बिन परखे को जानत नागर ।। पारख भूमि काहु नहिं पाई ।। ज्ञान सनीप नाहिं दरसाई ।। जेहि दरसे सो परख स्वरूपा ।। सो न परत झांई अँधकूपा ।। पारख में जो ह्वै गयो थीरा ।। तिन पायो गुरु सत्त कबीरा ।। सर्वोपर गुरु परख रहाई ।। पारखपर कोइ भूमि न भाई ।। छैप्रकारकी भूमि कहावै ।। परख प्रकाशी सबन लखावै ।। क्षिप्रा[1] गतागस्[2]त दूजि कहावे।। तीजी सौलो[3]ष्टता मन भावे ।। चौथि भूमिका सुलीन[4] रहाई ।। पचई भूमि आपु बौराई[5] ।। छठई[6] सत्त भूमिका भारी ।। सतई पारख भूमि निन्यारी ।। सोई भूमि तुम्हारी स्थिति होई ।। ताको पावे विरला कोई ।। पारख पाये परख समाना।। तहां न भास अध्यास अनुमाना ।। पारख परखी एकइ जाना ।। जगत ब्रह्म मिथ्या अनुमाना ।। यह निर्णय कबीर कृपाला ।। कहि

१ कल्पनाकृत नाना कर्म । २ ईश्वर । ३ आत्मा अद्वैतरूप ।

निरुवारो हंसन जाला ।। जो बीजककी स्थिती कहाई ।। सो शिष्य सकल तोहि समुझाई ।।१२५।।

दोहा– परखसाधगुरु परखकबीर, पारखपदपहिचान ।।
पारखके परतापते, सब भ्रम जाला मान ।।१२६।।

चौपाई–पारख गुरु कबीर कहावे ।। पारख धर्मदास बतलावे ।। पारखमें सब संत कहाई ।। पारख अमरदास गुरु पाई ।। तहँवाँते सुखलाल कृपानिधि ।। पारखपाय सकल बीजक विधि ।। पूरन तिनको चरणको चेरो ।। कृपादृष्टि उनहीं प्रभु हेरो ।। हौं मतिमंद सकल विधि हीना ।। दया कीन्ह पारख पद दीन्हा ।। सो पारख शिष्य तोहि बतावा ।। त्रिविधि भरम जाल परखावा ।। पारखमाहिं पारखी बासा ।। दूसर और रही नहिं आसा ।। गुरू शिष्य पारख कहलाये ।। दोउ देह जब दूर बहाये ।। पारखमें समता होय जाई ।। शिष्य भाव ना रहे गुरुवाई ।। देह भावते दास कहावे ।। पारख भाव एक होय जावे ।। जेहि पारखते हम सब परखा ।। सो पारख दीन्हा तोहि हरखा ।। पारखमें हम तुमहैं एका ।। देह भावते भिन्न विवेका ।। प्रथम बिचार गहो तुम जानी ।। सत्य असत्य करो बिलछानी ।। छानि छानि सब असत्य उडावो ।। सांच तत्त्व तबहीं तुम पावो ।। असत्य नाशमान कैं माने ।। वहु विधि भय जीवनको ताने ।। भयते धीरज झूठे भाई ।। धीरज गये अधीरता आई ।। नास्ति असत्य मानना त्यागो ।। भय धोखामें कबहुँ न पागो ।। अधीरता सब देउ बहाई ।। तब धीरज आपुहि रहिजाई ।। होनिहार सोई तन होई ।। ताहि मानि जिव काहेक रोई ।। तू अविनाशी सुखमें कहिये ।। याही जानि धीरता लहिये।। शील बचन बोलो मृदु बानी।। दुख सुख सहो छाँडि अभिमानि ।। दुख सुखभोग नास्ति सब जानो ।। शील भाव हृदयामें आनो ।। दया सदा राखो दिलमाहीं ।। बिना दया कारज कछु नाहीं ।। ममता गर्भ छाँडिके भाई ।। सदा करौ साधुन सेवकाई ।। साधुनके चरणामृत लीजे ।। मुख्य पूजा आदरसो कीजे ।। यथाशक्ति पूजा सेवकाई ।। महाप्रसाद संतनको पाई ।। तनके मांझ जो पारख पावे ।। गुरु मूरतिसों संत बतावे ।। पारखी गुरु नहीं कछु भेदा ।। और सकल जग कीन्ह निषेधा ।। सदा विचार

---

१ कर्म । २ उपासना । ३ योग । ज्ञान । ५ विज्ञान । ६ दया, क्षमा, सत्य, धीर, विचार ये शुद्ध गुण धारण ।

करो तुम भाई ।। जोलौ देह बिखर[1] नहिं जाई।। पारख ऊपर थिर ह्वै रहना ।। सकल परखना नाकछु गहना ।। वर्तमानमें बरतो भाई ।। भूत, भविष्य सब देउ बहाई ।। दुख सुखमें आसक्त न होई ।। बर्ण आश्रम माने नहिं कोई ।। परख बिलाखी पारख युक्ता ।। पारख स्वरूप सदा सो मुक्ता ।। सब निर्णयको जो है सारा ।। सोई जानो पारख विचारा ।। सो अब सकलो तोहि बतावा ।। करु विचार जो तुम मन भावा ।।१२७।।

छंद–निर्णयसार सो ग्रंथ सकलो तोहि कहेउ समुझायके ।। परख रहनी परख बानी परख पद परखायके ।। तत्त्वमसीको मानतो बहु बंधन जियरा को भयो ।। सो गांस फांस परखाय पारख पाय गुरुपद तोही लह्यो ।। अब परखरूप कबीरभौ भय भीर तोर निरुवारि है ।। जो पढई ग्रंथ ये करई निर्णय परख ताकहु तारि है ।। पारख पद ताकोमिले याको करे अभ्यास हो ।। सब मिटे बानी कल्पना अनुमान त्रिविधि भासहो ।।१२८।।

सोरठा–अष्टादश नव दोय, चैत्रशुद्ध दशमी तिथी ।। ग्रंथ समापत होय, परख बोध भौ शिष्य को ।।१२९।। साहेब पूरण प्रकाश, पूरण प्रकाशी दास हैं ।।अब कछु रही न आश, पूरण पारखमें मिल्यो ।।१३०।।

शिष्य स्तुति

छन्द–तुम होहु जाहि दयाल, सकलो जाल ताकर नासि हो।। तुम बिना न मिटि हैं काल, सुकृतपाल पारख प्रकाशि हो ।। का करौं मैं अस्तुति आज, सतगुरु कियो बहुत उपकार हो ।। तुम बन्दीछोर कबीर साहेब, मेटिया भव भार हो ।। सब करौं निछावर तोर, परम गुरु तन मन धन सब खेह हो ।। मम सुरति राखो चरणमें, यश नाशमान है देह हो ।। परख पद को पाय साहेब, मेटि गयो सब भास हो।। ब्रह्म जगत अनेक बानी, रहि न काहुकी आस हो ।।१३१।।

सोरठा–शरण शरण गुरुराय, बहुत सुखी मोको कियो ।। पूरन वंदन पाय, सब अपराध छिमा करो ।।१३२।।

दोहा– मैं नालायक प्रश्नकियो, तुम समुझायउ मोहि ।।
मोसे बोलत ना बन्यो, छिमा करो प्रभु सोहि ।।१३३।।

---

१ नाश ।

इति निर्णयसागर ग्रंथ गुरुकी दयासे सम्पूर्ण–गुरु अर्पणमस्तु ।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान ;

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅंक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष .०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

